IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सूफीमत का क्रमिक विकास

मनजीत

शोधार्थी रू एम.फिल

इतिहास विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा

उंदरपजवउचंतीो/हउंपसण्बवउ

शोध आलेख सार

सूफीमत का विकास कब और कहा हुआ इस विषय पर विद्वानों में मत भेद हैं। सूफीमत के विकास क्रम को समझने के लिए हमे अलग – अलग विचारधाराओ को समझना पडेगा।

मुख्य शब्द रू स्फियाना, कुरान,मतावलम्बी ।

सूफीमत का क्रमिक विकास रू

सूफीमत की उत्पत्ति कुरान से– सूफीमत की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों के विभिन्न मत एवं सिद्धान्त हैं। इन विषयों पर भी विद्वान एकमत नहीं हैं। कुछ विद्वान सूफीमत का मूल स्रोत 'कुरान' को मानते हैं जिसमें कुछ सूफी संतों ने कुरान की कुछ आयतें भी प्रस्तुत की हैं।

चन्द्रबली पाण्डेय भी इस मत का समर्थन करते हुए कहते हैं कि 'सूफीमत के उदभव को लेकर जो मतभेद पड़े हैं। उनके मूल में इस तथ्य की अव्हेलना ही दिखाई देती है। लोग उसके समीक्षकों में सर्वप्रथम उसकी भावना सहजवासना और मूल संस्कारों पर ध्यान नहीं देते।'

उपर्युक्त तथ्यों पर ध्यान देते हुए भी पाण्डेय जी इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि सूफीमत के उदभव के लिए हमें सभी जातियों की आदिम प्रवृत्तियों को ही ढठना है अन्यत्र कदापि नहीं[1]।

कुछ सूफीयों के विचार से सूफीमत का आरम्भ मे बीलवपन, नूंह में अंकुर, इब्राहिम में कली मूसा में विकास, मसीह में परिपाक एवं मध् का फलागम हुआ[2]।अन्य मतावलम्बी निदान, निकल्सन तथा ब्राउन सादृश मर्मज्ञों ने सूफीमत का मूल–स्रोत कुरान में माना है[3]।

कुरान के कुछ स्थल सूफीयों के सर्वथा अनुकुल हैं। ये अपने विचारों का मूल स्रोत कुरान से मानते हैं। इसकी हिदायतें अमान्य नहीं की जा सकती। कुरान में एक स्थान पर कहा है कि 'अल्लाह ने अपने दूत या देवदूत हजरत मुहम्मद के जरिये सृष्टि का रहस्य खोला। मनुष्य को जीवन शैली और रहन–सहन की पद्धति बताई उन्हीं मनुष्य को पूर्ण मानव बनने का मार्ग चेताया है।'

अधिकांश सूफियों ने मुहम्मद साहब को सूफीमत का आदि उपदेशक तथाकुरान को सूफीमत का आदि ग्रंथ माना। जलालुदीन रूमी ने एक स्थान पर लिखा है– 'कुरान का साश्तव हमने सूफीयों ने ले लिया है और निस्सार तस्तुओं को कुत्तों के लिए फैंक दिया अर्थात् सूफीयों ने कुरान के अमूल्य उपदेशों को ग्रहण कर लिया और व्यर्थ के आडम्बर–पाखण्ड और बाहरी कर्मकाण्ड को त्याग दिया।'

मुहम्मद साहब के जीवन और व्यवहार में कहीं–कहीं पर सूफीयों के लक्षण थे। वे उन्हीं की भांति सादगी और विलासिता रहित जीवन–व्यतीत करते थे। हेरा की गुफा में मुहम्मद साहब की साधना पद्धति सुफियाना ढंग की ही थी।

नव–अफलातूनी विचारधाराः

सूफीमत की उत्पत्ति नव–अफलातूनी विचारधारा से हुई।इस विचार के समर्थक प्रो0 ब्राउन तथा डॉ0 निकोल्सन हैं। नव अफलातूनी दर्शन एक आध्यात्मिक दर्शन है जिसका प्रवर्तक प्लेटो को माना जाता है। इनकी विचारधारा इनके शिष्यों स्पेनीसिमरस, जेनैनोक्रेटीज के बाद दम तोडने लगी। नव अफलातूनी दर्शन नींव बाद में फलातम्बूस ने डाली। इस विचारधारा में अफलातून और पैथागोरस के सिद्धान्तों तथा विचारों का समन्वय किया गया है। इसमें कुछ भारतीय सिद्धान्तों और विचारों का मिश्रण भी मिलता है।नव अफलातूनी दर्शन, तक्र और बुद्धि के द्वारा चरम लक्ष्य की प्राप्ति को असंभव मानता है। उसका मानना है कि इस मत के अनुसार मानव ईश्वर के साथ एक्य स्थापित नहीं कर सकता किन्तु सूफीयों ने इसके विरूद्ध कहा है कि 'ईश्वर द्वारा परमात्मा से रागात्मक संबंध स्थापित किया जा सकता है।' सूफीमत इस विचारधारा से विशष रूप से प्रभावित है।

सूफीमत का जन्म और विकास पूर्वी मस्तिश्क की देन है। नव अफलातूनी दर्शन का जन्मदाता 'प्लोटिनस' था जिसने प्लेटो और अरस्तु के सिद्धान्त का पूर्णरूप से अध्ययन करके उनका भारतीय दर्शन से सामंजस्य स्थापित करते हुए 'नव–अफलातूनी' दर्शन को जन्म दिया। इस तरह नव अफलातूनी यह मत का भारतीय विचारधारा से बहुत साम्य हैं। वह अप्रत्यक्ष रूप में भारतीय दर्शन का ही प्रभाव माना जाना चाहिए[4]।

अफलातूनी दर्शन में अद्वैतवाद पर बल दिया गया है जो सूफीमत का प्राण है। नव–अफलातूनी दर्शन में आत्मा को अमरता प्राप्त है। वह न पैदा होती है न मरती है[5]।

सूफीमत में आत्मा और परमात्मा के विषय में जो विचार प्रस्तुत किए हैं, वे नव अफलातूनी दर्शन के विचारों से मिलते–जुलते हैं। सूफीमत में नव–अफलातूनी दर्शन से ईश्वर प्रेम को ग्रहण किया गया है। ईश्वर प्रेम सूफीमत का आधार है।

सूफीमत और ईसायतः

यूरोप के कुछ विद्वानों का कहना है कि ईसाइयत के सान्यासिक जीवन, उपवास, पूजा, अन्तः शुद्धि, विकारों के लिए अनेक प्रकार की कष्टकारी शारीरिक साधना, प्रार्थना–विधि आदि से इस्लाम धर्म ही नहीं सूफीमत भी प्रभावित हुआ और सूफीयों ने इनके जीवन के सात्विक जीवन को ग्रहण कर लिया जिससे ईसाइयों ओर तापस जीवन ग्रहण करने वाले लोगों का आपस में सम्पक्र स्थापित हो गया। इस्लाम धर्म पर

भले ही ईसाइयत का प्रभाव पडा हो, परन्तु ये प्रभाव ईसाइयत के स्वयं के नहीं थे क्योंकि वह स्वयं नास्तिक मत, नव–अफलातूनी विचारधारा बौद्ध धर्म तथा सन्यासियों से प्रभावित हो चुका था।

सूफीमत की उत्पत्ति और उसके विकास में ईसाइयत के योगदान को मानने वालों में माग्रेट, श्री अल्फ्रेड वानन व्रेमर, इम्नोज गोल्ड जहर, डिकन ब्लैक मेकडोनाल्ड के नाम उल्लेखनीय हैं।

इन सभी का मानना है कि 'सन्यासी जीवन और सात्विक जीवन बिताना बाइबल की मुख्य शिक्षाओं में से एक है और ये गुण सूफीमत ने ईसाइयत से ग्रहण किए हैं।'

फ्रांसीसी विद्वान व्रेमर कहते हैं कि 'इस्लामी तसव्वुफ में जिन बातों का समावेश है, वे इस्लाम धर्म के पूर्व देश में प्रचलित थी और इस्लाम से पहले क अरबों पर ईसाई लोगों का बहुत प्रभाव पड़ा था और इन्हीं ईसाइयों के कारण अरबों में इस प्रकार का व्यवहार प्रचलित हुआ [6]।'

इन्हीं का समर्थन करते हुए इग्नोज गोल्ड जहर कहते हैं कि 'इस्लामिक तसव्वुफ में जो संतोष, त्याग, वैराग्य और फकीरी के गुण पाये जाते हैं, वे ईसाई धर्म की देन हैं[7]।'

कुरान की कुछ प्रारम्भिक सूराओं में तापसी जीवन और आत्म– संयम पर जो बल दिया गया, वह ईसाइयत में भी विद्यमान है जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि ईश्वर धर्म और इस्लाम धर्म की मान्यताओं में समानता पाई जाती है। इस्लाम धर्म के पूर्व ईश्वर ज्ञान संबंधी जिन विचारों को इस्लामियों में माना गया है वही यहूदी धर्म और ईसाइ धर्म में भी पाये जाते थे। यहूदी दार्शनिकों ने पहली शताब्दी हिजरी में जिन बातों को अपनी धार्मिक पुस्तक 'तौरेत' में सिद्ध किया है उन्हीं बातों को उसके पश्चात सूफियों ने अपनी कुरान में सिद्ध किया।

सूफीमत की स्वतः उत्पत्ति

जहाँ विद्वानों ने सूफीमत की उत्पत्ति कुरान, ईसाइयत तथा नव–अलफातूनी विचारधारा से मानते हैं वहीं कुछ विद्वानों का कहना है कि इसकी उत्पत्ति स्वतः हो गई। इस सिद्धान्त के मानने वालों में विल्बस फोर्स, क्लाक्र तथा जुईस इग्नोज के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन विद्वानों का मानना है कि प्रत्येक धर्म में एक ऐसा समय आ जाता है जब उसके अनुयायी ईश्वर प्रेम और इश्वर ज्ञान की ओर स्वतः अग्रसर होते हैं। इसी प्रकार सूफीमत के विचार बिना किसी बाह्य और आन्तरिक कारणों के अपने आप अस्तित्व में आये और धीरे–धीरे विकसित हुए।

सूफीमत की उत्पत्ति का स्रोत बौद्ध धर्मः–कुछ विद्वानों ने सूफीमत का आधार बौद्ध धर्म को भी माना है जिस प्रकार बौद्ध धर्म में प्रत्येक सम्प्रदाय और जाति के व्यक्ति को शरण मिल सकती थी उसी प्रकार सूफीमत में भी प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय और जाति का व्यक्ति स्थान प्राप्त कर सकता है[8]।बौद्ध धर्म का सारत्तव जीवन के आवागमन से मुक्त होना है। बौद्ध धर्म का चरम लक्ष्य जीवन में मोक्ष को प्राप्त करना है। जबकि सूफीमत का चरम लद्वय 'फना' को प्राप्त करना है। सूफी परमात्मा को ही सत्य मान उसी में विलीन हो जाते हैं। भावी जीवन के प्रति सूफियों की अनाशक्ति की भावना बौद्ध धर्म दर्शन का ही प्रभाव है। सूफियों का 'फना' हो या बौद्ध धर्म का निर्वाण दोनों का लक्ष्य मोक्ष अर्थात् ब्रह्म को प्राप्त करना है। बौद्ध धम का ध्यान और सूफियों की साधना में समाधि का महत्तव एक ही रूप में व्यवहृत हैं।

निकोल्सन ने नव–अफलातूनी दर्शन के साथ–साथ सूफीमत को बौद्ध धर्म की विचारधाराओं से भी प्रभावित माना है। नव–अफलातूनी दर्शन के साथ बौद्ध धर्म और भारतीय विचारधाराओं ने भी सूफीमत के विकास में योगदान दिया है।

वानक्रेमर ने सूफीमत पर दो प्रत्यक्ष प्रभावों को स्वीकार किया है – 'ईसाई साधकों का तापस जीवन और बाद में चलकर बौद्धों की चिन्तनधारा। बौद्ध त्तव चिन्ता के द्वारा इस्लाम की रहस्यवादी प्रवृति में जो महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, वानक्रेमर ने उन्हें ही असली सूफीमत माना है[9]।'

बौद्ध धर्म से ही सूफियों ने संसार त्याग और वैराग्य को अपनाया। सूफियों ने बौद्धों की तरह भिक्षु मठों और विहारों के समान जीवन बिताने के लिए खानकाहों को चुना। जिस काल में सूफीमत को मत के रूप में ग्रहण करने की बात स्वीकार की जा रही थी उससे पहले ही भारत का संबंध अरब के साथ था। उस समय राजनीतिक और व्यापारिक संबंधों के साथ वे यहाँ के रहन–सहन, धर्म, साधना पद्धति आदि के सम्पर्क में भी आये। अब तक वे यहाँ के बौद्ध सन्यासियों, तान्त्रिकों, सिद्ध पीठों से परिचित हो चुके थे। सिन्ध में भी बौद्ध धर्म का प्रचार हो चुका था।

मुस्लिम देश बौद्धों के आचार–विचार, पूजा,–पद्धति, मन्दिर–मूर्तियों आदि से इतना प्रभावित हुआ कि बौद्ध धर्म और बौद्ध भिक्षुओं का प्रभाव उन पर पडे बिना नहीं रह सका । ऐसा माना जाता है कि सूफी साधक ने माला फेरने का व्यवहार इन बौद्ध भिक्षुओं स ही ग्रहण किया है । सूफियों ने बौद्ध दर्शन से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष कुछ न कुछ अवश्य ग्रहण किया है ।

मौलाना जामी ने सूफी सिद्धान्त परर लिखी रचना 'नफहात ल उन्स' में हातम असम की एक उक्ति का उल्लेख किया है कि एक सूफी को चार प्रकार की मौत मर जाना चाहिए–प्रथम मौते अवभज 'अर्थात् भूखे रहकर दूसरी 'मौते असवद' अर्थात् दूसरों के कष्ट देने पर श्शांतिपूर्वक उसे सहन करना, तीसरी मौते अरवजर' अर्थात् दूसरों के फटे टुकडे सीना और उसे धारण करना उपर्युक्त सभी उपदश व शिक्षाएं बौद्ध धर्म में मौजूद हैं[10]।

<u>सूफीमत का काल–विभाजन :</u>

सूफीमत के पूरे ऐतिहासिक विकास को तीन कालों में विभक्त किया जा सकता है।

*<u>प्रथम युग :–</u>*ई0 पूर्व 10 वीं शताब्दी से सन् 871 ई0 तक

*<u>द्वितीय युगः–</u>*सन् 871 ई0 से सन् 1000 ई0 तक

*<u>तृतीय युग :–</u>*सन् 1000 ई0 से सन् 1550 ई0 तक

इसमें युग विशेश की विशेषता काल सूफी सन्त तथा उस समय की वर्तमान परिस्थितियों का वर्णन किया हे जिसे स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

प्रथम युग में सूफीमत के सिद्धान्तो का स्वरूप पूर्णरूप से स्पश्ट नहीं थे। उस समय सूफी साधक एकान्त स्थान में रहते और ईश्वर चिन्तन में लीन रहते थे। द्वितीय युग तक आते–आते इस मत में तर्क वितर्क की पद्धति का समावेश हुआ और अन्य दशे के दर्शन का प्रभाव पडने लगा जिसने यूनानी दर्शन, बौद्ध दर्शन, भारतीय वेदान्त आदि मुख्य रूप से सम्पक्र में आये और सूफीमत का दायरा बढने लगा।

भारत में इस्लाम और सूफीमत :

भारत में सूफोमत का प्रवशे कब से प्रारम्भ हुआ यह बतानाा एक कठिन कार्य है, पर इतना निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि भारत पर मुस्लिम आक्रमण के बाद से ही भारत में इस्लाम धर्म और सूफीमत का आगमन हुआ। पहले–पहल इन साधकों ने पंजाब, सिन्ध और पश्चिमोत्तर के कुछप्रान्तों का अपना स्थान बनाया और धीरे–धीरे सम्पूर्ण भारत सूफीमत और सूफी साधकों से परिचित हो गया।भारत मं सूफीमत तथा इस्लाम के प्रचार से पूर्व व्यापारिक तथा धार्मिक दृष्टि से भारत और अरब के बीच प्रगाढ संबंध पाया जाता है। बौद्ध जातक कथाओं में इसके संकेत हैं।

इस विषय में डॉ0 सरला शुक्ला लिखती हैं–'भारत के संबंध अरबों के विचार से बडे मूल्यवान थे। हजरत अमर ने एक बार एक व्यापारी से पूछा कि भारत के विषय में उसके क्या विचार हैं? उसने अत्यंत संक्षिप्त और मार्मिक उत्तर दिया – इसकी नदियां मोती हैं, पर्वत माला हं और वृक्ष इत्र हैं[11]।'

भारत और अरब के बीच व्यापारिक संबंध बड़ा ही प्राचीन हैं। हजरत युसुफ के काल से लेकर मार्कोपोलो और वास्कोडिगामा के समय तक भारत का व्यापारिक मार्ग अरब देश के अधीन थे।

ईसा मसीह से दो शताब्दी पूर्व एक यूनानी इतिहासकार यरशीदल लिखता है– 'जहाज भारत के समुन्द्र तट से यमन आते हैं और वहाँ से मिस्र पहुंचते हैं।' तात्पर्य यह है कि अरबों के साथ भारत का संबध ईसा के पूर्व का है। ईसा की छठी शताब्दी में मुहम्मद साहब ने अरब जाति में एक नवीन जागृति पैदा कर दी । नवीन अरब मुसलमान बडे उत्साह से नये–नये दशों को इस्तगत करने में त्तपर हो गये और एक समय आया कि जब वे मिस्र से स्पेन तक फैल गये। रूम सागर तक भी उनका अधिपत्य था।

भारत में मुसलमानों एवं सूफियों के प्रवेश करने के तीन मार्ग हो सकते थे –'जलमार्ग, स्थलमार्ग और खैबर के दर्रे । इन्हीं मार्गों से होकर सूफियों ने भारत में प्रवेश किया[12]।' भारतवष में इस्लाम धर्म सर्वप्रथम अरब व्यापारियों के साथ मालाबार तट तक पहुंचा ।

तमीम अंसारी ऐसे ही फकीर थे जिनकी कब्र मलिमापुर में बनी है। यह हजरत मुहम्मद के साथियों में से एक थे। मुहम्मद बिन कासिम के सिन्ध पर आक्रमण से पहले भारत के साथ मुसलमानों के व्यापार संबंध थे। ऐसा लगता है कि उन दिनों चीन से लंका तक इस्लाम धर्म का प्रचार कार्य चल रहा था क्योंकि लंका और दूसरे स्थनों पर इस्लामी प्रचारकों के मकबरे पाये जाते हैं। इब्नेबतूता ने लंका में ऐसे कई मकबरे देखें थे[13]।

धर्म प्रचारकों में सर्वप्रथम शेख–इस्लाम सन् 1005 ई0 में लाहौर आये। इनके बाद सन् 1036 में अबुल हसन बिन उस्मान बिन अ–हजुवीरी के लाहौर आने का पता चला। उन्होनें अपनी पुस्तक फक–अल–महजूब में सूफीमत का बड़ा सुन्दर विवेचन किया है। सुफियों का यह विश्वास है कि अली हुजवीरी भारतवर्ष के संतो के उपर अधिनिष्ठत है और यद्यपि उनकी मृत्यु हो गई और फिर भी कोई भी सन्त बिना उनकी आज्ञा के इस देश में नहीं प्रवेश करता[14]।

ईसा की तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दी में मुस्लिम धर्म प्रचारकों और सूफियों काप्रा जोर देश के कई भागों में रहा। चौदहवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में कश्मीर में सर्वप्रथम बुलबुल शाह ने सूफीमत का श्रीगणेश किया[15]। पन्द्रहवीं शताब्दी के अंत तक शम्सुद्दीन के प्रभाव से प्रभावित होकर लोगों ने मुसलमान बनना आरम्भ कर दिया और इस्लाम का प्रचार पबल हो उठा।

भारतवर्ष आने वाले प्रारम्भिक सूफियों के संबंध में भी बहुत कुछ अज्ञात हैं।महावीर खमदायत नामक तसव्वुफ प्रचारक अरब से 1304 ई0 में आया जिसने दक्षिण भारत में बीजापुर के बहुत से जैनियों को मुसलमान बनाया । इसी तरह सन् 1430 ई0 में खोजा सम्प्रदाय के पीर सदर अल–दीन ने सिन्ध प्रदेश में धर्म परिवर्तन करवाकर धर्म का प्रचार प्रसार किया।

सिन्ध और पंजाब में प्रारम्भ से ही धर्म प्रचारक और सूफी साधक आते रहे। सिन्ध में पूर्णतः सूफोमत फैल चुका था। सिन्ध में सूफीमत के प्रवर्तक के रूप में सैयद उस्मान षाह थे। धीरे–धीरे सूफी साधक उतरी भारत के अन्य भागों में भी फैल गये और इसका प्रचार बढता गया।इस धर्म परिवर्तन में सूफियों और अन्य मुस्लिम फकीरों के षांतिपूर्ण तथा चमत्कार षक्ति का कम हाथ नहीं रहा है[16]।

श्री मेमडोनाल्ड'ऐसपैक्टस ऑफ इस्लाम' में लिखते हैं –'इस्लाम के प्रचार के लिए नीतिज्ञ दरवेश प्रान्तीय प्रदेशों में जातेऔर अपनी उदारता तथा प्रेम के उपदशों से कतिपम व्यक्तियों को मढ लेते थे। धीरे–धीरे जब इनकी संख्या पर्याप्त हो जाती थी, तब इनकों अपनी षक्ति में विष्वास हो जाता था। फलतः तब इनका वहीं एक उपनिवेश बन जाता था जो समय पाकरर किसी मुस्लिम शासन के सहारे किसी साम्राज्य में परिवर्तित हो जाता था[17]।

सूफी साधक बहुत ही उदार थे और इन्होंने इस्लाम धर्म को सर्वप्रथम मानने की हठधर्मिता भी छोड दी।भारत में प्रवश के बाद सूफीमत को हिन्दू धर्म ने पूर्णतः प्रभावित किया। जो सूफीमत का प्रारम्भिक रूप था उसे परिवर्तित किया। फलस्वरूप हिन्दू धर्म की बहुत सी चीजों को इन्होनें सादगीपूर्ण जाने अनजान ग्रहण कर लिया।ईसा की सत्रहवीं शताब्दी में सूफीमत और भी परिवर्तन हो गया। शाहजहां के काल में दाराशिकोह के काल तक इस पभाव का और भी विस्तार हुआ लकिन ये सूफी इस्लामियत से अलग न हो सके। यद्यपि अधिकांश लोग हिन्दू धर्म की ओर झुक गए। औरंगजेब के शासनकाल में बहुत से सूफी इस्लामी कट्टरता के विरोध में बोलने लगे और यहीं से सूफीयों ने धर्म के विरूद्ध युद्ध आरम्भ कर दिया उसो काल में बुल्लशाह आर इनायत शाह जैसे सूफी हुए थे।

<u>सूफीमत पर विदशी प्रभावः</u>

इस्लामी सम्प्रदायों में व्याप्त परम्परा इस्लामी मान्यताओं का खण्डन एवं सूफी सन्यास भावना तथा चिन्तन विचारकों के अभ्युदय के पीछे इस धर्म का चिन्तन शून्य पक्ष खलीफाओं के शासन के स्वार्थ द्वन्द्व के कारण उत्पन्न निर्वेद एवंविदेशी त्तव चिन्तकों की चिन्तन धाराओं के प्रभाव का हाथ है[18]। अनेक यूरोपीय विद्वानों ने 'सूफीमत' पर ईसाइयत नव–अलफातूनी मत, भारतीय वेदान्त दर्शन बौद्ध तथा जैन दर्शन के प्रभाव को स्वीकार किया है। 'जून शिबली और मंसूर हल्लाज' जैसे सूफियों से उक्त विदेशी आध्यात्मिक दर्शनों से प्रभावित होकर इस्लाम विदेशी विचारकों को व्यक्त किया और 'सूफीमत' को एक नई दिशा प्रदान की[19]।

फ्रांसीसी विद्वान डोजी 'सूफीमत' को पूर्णतः भारतीय दर्शन से प्रभावित मानते हैं । इनके इस मत का समर्थन कापेनहाबर, गोल्डजिहर, ह्यूगेस तथा सर विलियम जोन्स आदि ने भी किया। ठीक इसके विपरीत ब्राउन, निकोल्सन ने कहा कि 'सूफीमत मूलतः नव अफलातूनी दर्शन से प्रभावित है तथा इस पर बौद्ध नास्तिक तथा मानी का भी प्रभाव नजर आता है।'

यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है। सूफीमत का अध्ययन केवल यूरोपीय विद्वानों ने किया है।सूफीमत के प्रारम्भिक काल में ग्रीक दर्शन और उसके विचारों का प्रभाव भी इस्लामी दुनिया में दृष्टिगोचर होता है।

एडलबर्ड मर्क्स ने प्रारम्भिक काल के सूफी साधकों का गहन अध्ययन किया और कहा कि 'सूफीमत का आविर्भाव यूनानी दर्शन से हुआ।' इन्होंने अपने अध्ययन से सूफीमत और सिद्धान्तों को पूर्णतः यूनान की देन मान लिया परन्तु निकोल्सन ने इसके इस मत का खण्डन किया तथा अपने मत को तक्रपूर्ण अफलातूनी दर्शन, नास्तिक मत यूनानी दर्शन के प्रभाव को बहुत दूर तक स्वीकारकरता है।

ब्राउन कहते हैं कि 'अन्य विचारधाराओं की अपेक्षा सूफीमत के सिद्धान्त को बनाने में नव अफलातूनी दर्शन का सबसे बडा हाथ है[20]।

गोल्डजिहर ने इस मत का प्रत्याख्यान करते हुए बताया कि ब्राउन के जैसे मत रखने वाले विद्वानों का ध्यान इस ओर नहीं जाता कि जिन पूर्वी क्षेत्रों में सूफीमत का विकास हुआ वहाँ नव अफलातूनी सिद्धान्तों एवं इसके सदृश्य अन्य सिद्धान्तों पर पहुंचना कठिन था। अतएव उसका कहना है कि 'जैसे–जैसे इस्लाम का प्रसार अन्य देशों में होता गया सूफीमत में परिवार्शिवक परिस्थितियों के कारण नई–नई चीजों का समावेश होता गया। उसने बौद्ध धर्म के प्रभाव को स्वीकार किया।' निकोल्सन ने यूनानी प्रभाव को सूफीमत के आविर्भाव तथा विकास में प्रमुख स्थान दिया है[21]।

जाहिज की मृत्यु सन् 255 हिजरी में हुई। उस समय सूफीमत अपने प्रारम्भिक अवस्था में था। उसी समय बसरा के चिन्तकों ने यह स्वीकार किया कि विचार और चिन्तन की विद्या भारत से ही पश्चिमी देशों में पहुंची है।

भारतीय वेदान्त धर्म एवं जीवन दर्शन का प्रभाव अरब, सीरिया,मिस्र, ईरान आदि देशों में सूफीमत का प्रभाव पड़ा। इसके अतिरिक्त बसरा,बगदाद, दमिश्क आदि केन्द्रों के सूफी साधकों पर भारतीय बौद्ध धर्म का प्रभाव पड़ा जिसे पाष्चात्य विद्वानों ने स्वीकार भी किया। भारतीय योग साधना तथा तन्त्र–मंत्र का प्रभाव बौद्ध धर्म पर पड़ासूफीयों ने हिन्दू चिन्तनधारा में प्रत्यक्ष रूप से बौद्ध धर्म के माध्यम से भी प्रभावग्रहण किया। इनमें निर्वाण या मौक्ष की शान्ति 'फना' की भावना त्याग एवं सन्यासपूर्ण जीवन–विधि, जप–माला आदि के प्रयोग भारतीय साधना के प्रभाव से ही पहुंचे। बौद्ध धर्म का इतना प्रभाव सूफीयों पर पडा कि भगवान बुद्ध के जीवन की कथाओं को भी सूफी संतों ने जीवन के साथ जोडकर कहा जाने लगा[22]।

कुछ लोग सूफीमत के आविर्भाव को शामी धर्म की विजय के विरूद्ध आर्यों की प्रतिक्रिया से मानते हैं और कुछ लोग इस्लामी सभ्यता पर भारतीय प्रभाव को मानते हैं। मुस्लिम धर्म षास्त्र, दर्शन और विज्ञान यूनानी संस्कृति से सराबोर थी। ईसाई धर्म,नव–अफलातूनी धर्म, बौद्ध धर्म और भारतीय विचारधाराओं ने सूफीमत के विकास में योगदान दिया है। इस बात को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। सूफीमत पर मुख्यतः दो प्रभावों को स्वीकार किया जा सकता है। ईसाई का सादा जीवन और बौद्धों की चिन्तनधारा। सूफी साधकों पर भारतीय अद्वैत वेदान्त का व्यापक प्रभाव पड़ा।

जामी ने कहा कि 'जून–नून को मिस्र देश का था, सूफियों का प्रमुख था और उसके ही दिखाये रास्ते पर सूफियों की साधना चलती है। सभी उससे संबंधित है। प्रारम्भ के सूफी साधकों में जून–नून काक स्थान अपना महत्व रखता है[23]।'

सूफीयों ने योग साधना हिन्दू–दर्शन से आर माला काा व्यवहार बौद्ध भिक्षुओं से सीखा इनके मत और सिद्धान्त तथा साधना पद्धति का संबंध कुरान और हदीस से है। सूफीमत में ऐसे बहुत से विचारों और सिद्धान्तों का समावेश है जिन्हें इस्लाम की प्रवृति से विपरीत समझा जाता है। सूफीमत की जो विचारधारा है वह किसी एक मत से पूर्णतः प्रभावित नहीं है अपितु सभी की आपस में समानता पाई जाती है।

निष्कर्ष :

अतः कहा जहा सकता हैं कि सूफीमत के विकासकम पर विद्वानों मे विभिन्न मतभेद हैं। कुछ विद्वान सूफीमत का मूल स्रोत 'कुरान' को मानते हैं जिसमें कुछ सूफी संतों ने कुरान की कुछ आयतें भी प्रस्तुत की हैं। इसके साथ –साथ सूफीमत के विकास पर समय के साथ साथ अलग –अलग विचारधाराओ ने भी अपना प्रभाव डाला हैं।

कुछ सूफीयों के विचार से सूफीमत का आरम्भ मे बीलवपन, नूंह में अंकुर, इब्राहिम में कली मूसा में विकास, मसीह में परिपाक एवं मधु का फलागम हुआ।अन्य मतावलम्बी निदान, निकल्सन तथा ब्राउन सादृश मर्मज्ञों ने सूफीमत का मूल–स्रोत कुरान में माना है।

कुछ विद्वानों ने सूफीमत का आधार बौद्ध धर्म को भी माना है जहाँ विद्वानों ने सूफीमत की उत्पत्ति कुरान, ईसाइयत तथा नव–अलफातूनी विचारधारा से मानते हैं वहीं कुछ विद्वानों का कहना है कि इसकी उत्पत्ति स्वतः हो गई। चाहे जो भी हो जेसे –जैसे सूफीमत का प्रभाव क्षेत्र फेलता गया वेसे –वेसे उस पर अन्य विचारधाराओ का प्रभाव पडता गया।

संदर्भ सूची :

1. तसव्वुफ अथवा सूफीमत प्रथम संस्करण चन्द्रबली पाण्डेय पृ0–10
2. तसव्वुफ अथवा सूफीमत प्रथम संस्करण चन्द्रबली पाण्डेय पृ0–14
3. तसव्वुफ अथवा सूफीमत प्रथम संस्करण चन्द्रबली पाण्डेय पृ0–3
4. मध्ययुगीन सूफीमत सन्त साहित्य–मुक्तेश्वर तिवारी पृ0– 49
5. भारतीय इतिहास ओर साहित्य में सूफी दर्शन –हरदेव सिंह पृ0–26
6. भारतीय इतिहास ओर साहित्य में सूफी दर्शन –हरदेव सिंह पृ0–26
7. भारतीय इतिहास ओर साहित्य में सूफी दर्शन –हरदेव सिंह पृ0–26
8. भारतीय इतिहास ओर साहित्य में सूफी दर्शन –हरदेव सिंह पृ0–29
9. सूफीमत साधना और साहित्य–रामपूजन तिवारी पृ0–185
10. भारतीय इतिहास ओर साहित्य में सूफी दर्शन –हरदेव सिंह पृ0–30
11. जायसी के पूर्ववर्ती हिन्दी सूफी कवि और काव्य प्र0 सं0 डॉ0 सरला शुक्ल पृ0–18
12. भारतीय इतिहास ओर साहित्य में स्फी दर्शन – डॉ0 हरदेव पृ0–37

13. इस्लाम के सूफी साधक अनुवाद नर्मदेश्वर चतुर्वेदी पृ0– 18

14. सूफीमत साधना और साहित्य–रामपूजन तिवारी पृ0–408

15. सूफीमत साधना और साहित्य–रामपूजन तिवारी पृ0–409

16. सूफीमत साधना और साहित्य–रामपूजन तिवारी पृ0–416

17. तसव्वुफ अथवा सूफीमत प्रथम संस्करण चन्द्रबली पाण्डेय पृ0–209 ता 206

18. सूफीमत कन्हैया सिंह पृ0– 15

19. ए लिटरेरी हिस्टरी ऑफ पर्शिया– ब्राउन 1909 पृ0–420

20. लिटरेरी हिस्टरी ऑफ दी पर्शिया–ई.जी.ब्राउन–1909 पृ0–420

21. लिटरेरी हिस्ट्री ऑफ दी अरब 1930– आर.एन.निकोल्सन, पृ0– 388

22. सूफीमत–कन्हैया सिंह, पृ0–20

23. सूफी साधना और साहित्य –रामपूजन तिवारी, पृ0– 18